SYLLABUS

RAJASTHANI

M.A (Previous) Examination, 2015
M.A (Final) Examination, 2016
M.Phil. Examination, 2015

JAI NARAIN VYAS UNIVERSITY
JODHPUR

Contents

GENERAL INFORMATION	1
M.A. PREVIOUS	3
M.A. FINAL	10
M.PHIL.	20

विभागीय प्राध्यापकों की सूची

1. डॉ. अर्जुनदेव चारण, आचार्य एवम् विभागाध्यक्ष
2. डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित सहायक आचार्य
3. डॉ. धनन्जया अमरावत सहायक आचार्य
4. डॉ. मीनाक्षी बोराणा सहायक आचार्य

FACULTY OF ATRS, EDUCATION & SOCIAL SCIENCES

MASTER OF ARTS

General Information for Students

The examination for the degree of master of Arts, Education and Social Sciences shall consist of two parts : (i) The Previous Examination and (ii) The Final Examination.

The examination will be through theory papers/practicals/viva. Pass marks for the previous and final examinations are 36% of the aggregate marks in all the theory papers and viva/practicals and not lesa than 25% marks in the individual theory paper/viva/practicals. A candidate is required to pass in the written and the practical/viva examinations separately.

Successful candidates will be placed in the following divisions on the basis of the total marks obtained in previous and final examination taken together.

First division 60% , Second division 48%, and Third divisions 36%

No student will be permitted to register himself simultaneously for more than one post-graduate course.

ATTENDANCE

1. for all regular candidates in the faculties of Arts, Education and Social Sciences, Science, Law, Commerce and Engineering, the minimum attendance requirement shall be that a candidate should have attended at least 75% of the lectures delivered and tutorials held taken together as well as 75% of practicals and sessionals from the date of his/her admission.
2. Condonation of shortage of attendance :

The shortage of attendance upto the limits specified below may be condoned on valid reasons:

i) Upto 6% in each subject plus 5 attendance in all the aggregate of subjects/papers may be condoned by the vice- Chancellor on the recommendation of the Dean/Director/ Principal for undergraduate students and on the recommendation of the Head of the Department for the post-graduate classes.

ii) The N.C.C. Cadets sent out to parades and camps and such students who are deputed by the university to take part in games, athletic or cultural activities amy, for purpose of attendance, be. Treated as present for the days of their absence in connection with the aforesaid activities and that period shall be added to their subject wise a attendance.

Note: 1. The attendance for supplementary students will be counted from the date of their admission.

3. In the Faculty of Engineering the attendance requirement will aply to each semester.

However, in case of practicals where examination is not held at the end of the first semester but at the end of the second semester,attendance will be counted at the end of the second semester taking into account attendance put in both the semesters(i.e. first and second) taken together.

Medium

Candidates are not allowed to use any medium except Hindi or English for answering question papers.

For answering papers in the subjects of English/Hindi or English for answering question papers,

For answering papers in the subjects of English/Hindi the medium will be corresponding language only.

For answering question papers in the subject of Sanskrit the candidates are allowed to use Sanskrit, Hindi or English unless specified otherwise.

राजस्थानी

आवष्यक सूचनाः एम.ए. (पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध) राजस्थानी के सभी प्रष्न–पत्रों का उत्तर देने का माध्यम राजस्थानी भाषा ही होगा।

एम.ए.पूर्वार्द्ध परीक्षा, 2014

इस परीक्षा के लिए चार प्रष्न–पत्र होंगे। प्रत्येक प्रष्न–पत्र 100 अंकों तथा तीन घण्टे की अवधि का होगा। चार प्रष्न–पत्र निम्नानुसार होंगेः

प्रथम प्रष्न पत्र : आधुनिक राजस्थानी गद्य
द्वितीय प्रष्न पत्र : आधुनिक राजस्थानी पद्य
तृतीय प्रष्न पत्र : राजस्थानी भाषा एंव साहित्य का इतिहास
चतुर्थ प्रष्न पत्र : लोक साहित्य

प्रथम प्रष्न पत्र

आधुनिक राजस्थानी गद्य

अंक विभाजन पूर्णांक : 100
व्याख्या **10X4=40 अंक**
आलोचनात्मक **15X4=60 अंक**

इकाई विभाजन

इकाई 1 : सप्रसंग व्याख्या (प्रत्येक पाठ्य पुस्तक से एक व्याख्या करना अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या के के लिए दस अंक निर्धारित है।	40 अंक
इकाई 2 : मेवे रा रूंख – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 3 : माटी री महक – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 4: राजस्थानी निबन्ध संग्रह – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक

पाठ्य पुस्तकें

अन्नाराम सुदामा : मेवे रा रूंख (उपन्यास), धरती प्रकाषन,बीकानेर
करणीदान बारहठ : माटी री महक,बारहठ प्रकाषन,फेफाना,हनुमानगढ़
चन्द्रसिंहः राजस्थानी निबन्ध संग्रह निबन्ध, राजस्थानी साहित्य अकादमी, उदयपुर
यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : तास रो घर, प्रकाषक राजस्थानी भाषा प्रचार सभा, जयपुर

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ.किरण नाहटा : आधुनिक राजस्थानी साहित्य,चिन्मय प्रकाषन, जयपुर
अगरचन्द नाहटा : राजस्थानी काव्य की गौरवपूर्ण परम्परा, राधकृष्ण प्रकाषन,दिल्ली
राजस्थानी साहित्य की समीक्षा–'जागती जोत' पत्रिका, राजस्थानी भाषा साहित्य एंव संस्कृति अकादमी,बीकानेर

द्वितीय प्रष्न पत्र

आधुनिक राजस्थानी पद्य

अंक विभाजन पूर्णांक : 100

व्याख्या 10X4=40 अंक

आलोचनात्मक 15X4=60 अंक

इकाई विभाजन

इकाई 1 : सप्रसंग व्याख्या (प्रत्येक पाठ्य पुस्तक से एक व्याख्या करना अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या के के लिए दस अंक निर्धारित है।)	40 अंक
इकाई 2: वीर सतसई – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 3 : लू – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 4 : राधा – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 5 : लीलटांस– आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक

पाठ्य पुस्तकें

पतराम गौड़, ईष्वरदान आषिया व डॉ. कन्हैयालाल सहज (सम्पादक) : वीर सतसई (सूर्यमल्ल मिश्रण), बंगाल हिन्दी मण्डल, कलकत्ता

चन्द्रसिंह : लू,चाँद जलेरी प्रकाषन,जयपुर

सत्यप्रकाष जोषी: राधा,राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

कन्हैयालाल सेठिया– लीलटांस,प्रकाषक– स्व. मुरलीधर सराफ स्मृति ग्रंथ माला, कलकत्ता

संदर्भ ग्रन्थ

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण स्मृति अंक, सूर्यमल्ल स्मारक समिति, बूंदी परम्परा (त्रै–मासिक पत्रिका), सूर्यमल्ल मिश्रण विषेषांक तथा 'हेमाणी' अंक, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

डॉ.शम्भुसिंह मनोहर : वीर सतसई (सम्पादक), स्टुडेन्ट्स बुक कम्पनी, चौडा रास्ता,जयपुर

तृतीय प्रष्न –पत्र
राजस्थानी भाषा एंव साहित्य का इतिहास

अंक विभाजन 20 X5=100 पूर्णांक : 100

भाषा एंव लिपि : सामान्य परिचय	20X2=40 अंक
राजस्थानी भाषा	
राजस्थानी साहित्य का इतिहास	20X3=60 अंक

इकाई विभाजन

इकाई 1: भाषा एवं लिपि : सामान्य परिचय	20 अंक
इकाई 2: राजस्थानी भाषा	20 अंक
इकाई 3 : राजस्थानी साहित्य का आदिकाल – आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक
इकाई 4: राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल – आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक
इकाई 5: राजस्थानी साहित्य का आधुनिककाल– आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक

पाठ्यक्रम विषय सामग्री

भाषा : भाषा विज्ञान की परिभाषा, भाषा के अंग, भाषा विकास के कारण, मानक भाषा, बोली, उपबोली

लिपि : लिपि और भाषा का सम्बन्ध, नागरी अंक और लिपि का विकास,मुडिया लिपिः सामान्य परिचय

राजस्थानी भाषा : वैदिक संस्कृत, प्राकृत,अपभ्रंष– सामान्य परिचय राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति एंव विकास,क्षेत्र– विस्तर, बोलियां, उपबोलियां, डिंगल–पिंगल की सामान्य विषेषताएं, राजस्थानी की व्याकरणिक विषेषताएं

राजस्थानी साहित्य का इतिहास : राजस्थानी साहित्य का करल विभाजन, कालगत–प्रवृत्तियाँ,काव्य–धाराएँ,विधाएँ,प्रमुख रचनाएँ तथा रचनाकार

संदर्भ ग्रन्थ

प्रो. रामाश्रय मिश्र एंव डॉ. नरेष मिश्रः भाषा और भाषा विज्ञान, उन्मेष प्रकाषन,12, सुभाष कॉलोनी ,करनाल, हरियाणा
भोलानाथ तिवारीः भाषा विज्ञान, किताब महल,दिल्ली
डॉ.सुनिति कुमार चाटुर्ज्या : राजस्थानी भाषा,साहित्य संस्थान, उदयपुर
एल.पी.टैक्सीटोरी (अनु.)डॉ0 नामवरसिंह : पुरानी राजस्थानी
जार्ज ए,ग्रियसैन (अनु.) आत्माराम जाजोदियाः राजस्थान का भाषा सर्वेक्षण, राजस्थानी भाषा प्रचार, जयपुर
जगदीष प्रसाद कौषिक : भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास
डॉ.मोतीलाल मेनारियाः राजस्थानी भाषा और साहित्य
नरोतमदास स्वामी : राजस्थानी भाषा – एक परिचय
डॉ.मोतीलाल मेनारियाः राजस्थान का पिंगल साहित्य
सीताराम लालस(सम्पा.) : राजस्थानी शब्दकोस (प्रथम खण्ड),राजस्थानी शोध संस्थान,चौपासनी, जोधपुर
डॉ.उदयनारायण तिवारी : वीर साहित्य
डॉ. गोवर्द्धन शर्मा : डिंगल साहित्य
डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य का आदिकाल
रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास
डॉ.कन्हैयालाल शर्मा : हाडौती बोली और साहित्य
श्याम परमार : मालवी और उसका इतिहास
डॉ. महावीरप्रसाद शर्मा : मेवाती का उद्‌भव एवं विकास
डॉ. ओमप्रकाष भारद्वाज : मानक भाषा विज्ञान
डॉ. कैलाषचन्द्र अग्रवाल : शेखावटी बोली का विवरणात्मक अध्ययन
डॉ. रतनचन्द्र शर्मा : मानक हिन्दी और भाषा विज्ञान
डॉ.एल.बी.जोषी : बागड़ी बोली का स्वरूप और तुलनात्मक अध्ययन
गोरीशंकर हीराचन्द ओझा : प्राचीन भारतीय लिपिमाला
नरोतमदास स्वामी : राजस्थानी व्याकरण
रामकरण आसोपा : मारवाडी व्याकरण
सीताराम लालस : राजस्थानी व्याकरण
सांस्कृतिक राजस्थान : अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता
डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा : भाषा विज्ञान की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाषन,दिल्ली
परम्परा : त्रैमासिक पत्रिका के आदिकाल तथा मध्यकाल संबंधी विषेषांक

चतुर्थ प्रष्न – पत्र
लोक साहित्य

अंक विभाजन पूर्णांक : 100

इकाई विभाजन

इकाई 1 : लोक साहित्य : सामान्य सिद्धान्त, परिभाषा, लोक तत्व, लोक मानस, आलोचनात्मक प्रष्न 20 अंक

इकाई 2 : लोक साहित्य तथा अन्य समाज विज्ञान : पुरातत्व, इतिहास , दर्षन, भाषा–विज्ञान, मनोविज्ञान , नृविज्ञान तथा जाति विज्ञान : आलोचनात्मक प्रष्न 20 अंक

इकाई 3 : राजस्थानी लोक साहित्य : लोक गीत, लाक गाथाएँ : आलोचनात्मक प्रष्न 20 अंक

इकाई 4 : राजस्थानी लाक साहित्य : लाक कथा , लोक नाट्य : आलोचनात्मक प्रष्न 20 अंक

इकाई 5 : राजस्थानी लोक साहित्य : लोक विष्वास, पहेलियां, कहावतें : आलोचनात्मक प्रष्न 20 अंक

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ.सोहनदान चारण : राजस्थानी लोक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन
डॉ.महेन्द्र भानावत : लोक रंग
डॉ. महेन्द्र भानावत : राजस्थानी लोक नाट्य परम्परा एवं प्रवृत्तियाँ
डॉ. सत्येन्द्र : लोक साहित्य विज्ञान
डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय : लोक साहित्य की भूमिका
श्याम परमार : भारतीय लोक वांगमय
श्याम परमार : लोकधर्मी नाट्य परम्परा

वसुदेवषरण अग्रवाल : लोक धर्म
मन्मथनाथ गुप्त : लोकोत्सव
श्रीकृष्णदास : लोकगीतों का समाजषास्त्रीय अध्ययन
झवेरचन्द मेघानी : लोक साहित्य (व्याख्यान)
सूर्यकरण पारीक : राजस्थानी लोक गीत
नानूराम संस्कर्त्ता : राजस्थान का लोक–साहित्य
डॉ.कृष्णकुमार शर्मा : राजस्थानी लोक गाथा
डॉ. कन्हैयालाल सहल : राजस्थानी लोकभाषाओं के कुछ रूढ़ तत्व
लक्ष्मीलाल जोषी : मेवाड़ की कहावतें
डॉ. कन्हैयालाल सहल : राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन
डॉ. कन्हैयालाल शर्मा : तेजाजी
डॉ. महेन्द्र भनावत : तेजाजी
चन्द्रदान चारण : गोगाजी चौहान की राजस्थानी गाथा
डॉ. वेदप्रकाष जुनेजा : नाथ सम्प्रदाय और साहित्य
डॉ. मनोहर शर्मा : राजस्थानी साहित्य और संस्कृति
गौरीषंकर हीराचन्द ओझा : मध्यकालीन भारतीय संस्कृति
लक्ष्मीकुमारी चूंडावत(सम्पा.) : बगड़ावत देवनारायण गाथा
भागीरथ कानोडिया तथा गोविन्द अग्रवाल : राजस्थानी कहावत – कोष
डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी : नाथ सम्प्रदाय

एम.ए. उत्तरार्द्ध परीक्षा , 2014–15

आवश्यक सूचना : राजस्थानी के सभी प्रष्न – पत्रों का उत्तर देने का माध्यम राजस्थानी भाषा ही होगा।

इस परीक्षा के चार प्रष्न– पत्र होंगे। प्रत्येक प्रष्न–पत्र तीन घण्टे की अवधि तथा 100 अंकों का होगा। इसके अतिरिक्त 100 अंकों की मौखिकी होगी। प्रष्न–पत्र इस प्रकार होंगे।

प्रथम प्रष्न–पत्र : प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थानी काव्य
द्वितीय प्रष्न–पत्र : प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थानी गद्य
तृतीय प्रष्न–पत्र : साहित्य शास्त्र एवं पाठालोचन
चतुर्थ प्रष्न –पत्र : निबन्ध अथवा लघुषोध प्रबन्ध अथवा विषिष्ट रचनाकार

प्रथम प्रष्न –पत्र

प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थानी काव्य

अंक विभाजन पूर्णांक : 100

सप्रसंग व्याख्या 10X4=40 अंक
आलोचनात्मक प्रष्न 15X4=60 अंक

इकाई विभाजन

इकाई 1: सप्रसंग व्याख्या
(प्रत्येक पुस्तक से एक व्याख्या करना अनिवार्य है।
प्रत्येक व्याख्या के लिए 10 अंक निर्धारित है।)
इकाई 2 : ढोला मारू रा दूहा – आलोचनात्मक प्रष्न 15 अंक
इकाई 3 : वेलि क्रिसन रूकमणी री – आलोचनात्मक प्रष्न 15 अंक
इकाई 4 : रणमल्ल छन्द – आलोचनात्मक प्रष्न 15 अंक
इकाई 5 : हालां झालां रा कुण्डलियां – आलोचनात्मक प्रष्न 15 अंक

पाठ्य पुस्तकें

रामसिंह, सूर्यकरण पारीक और नरोतमदास स्वामी (समप.) : ढोला मारू रा दूहा (केवल प्रथम 210 दोहे), नापगरी प्रचारिणी सभा, काषी
नरोतमदास स्वामी (संपा.) : वेलि क्रिसन रूकमणी री (केवल प्रथम 239 छनद), श्री राम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा
मूलचन्द्र प्राणेष (सम्पा.) : रणमल्ल छनद, भारतीय विद्या मन्दिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
डॉ. मोतीलाल मेनारिया (सम्पा.) : हालां झालां रा कुण्डलियां, हितेषी पुस्तक भण्डार, उदयपुर

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ. शान्ता भानावत : ढोला मारू रा दूहा का अर्थ और वैज्ञानिक अध्ययन, अनुपम प्रकाषन, जयपुर
डॉ. भगवतीलाल शर्मा : ढोला मारू रा दूहा में काव्य, संस्कृति और इतिहास
अगरचन्द नाहटा : प्राचीन काव्यों की रूप – परम्परा, भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
डॉ.आनन्द प्रकाष दीक्षित : वेलि क्रिसन रूकमणी री

द्वितीय प्रष्न–पत्र

प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थानी गद्य

अंक विभाजन पूर्णांक : 100

व्याख्या	10X4=40 अंक
आलोचनात्मक	15X4=60 अंक

इकाई विभाजन

इकाई 1: सप्रसंग व्याख्या (प्रत्येक पुस्तक से एक व्याख्या करना अनिवार्य है। प्रत्येक व्याख्या के लिए 10 अंक निर्धारित है।	40 अंक
इकाई 2 : कुंवरसी सांखलो – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 3: राजस्थानी साहित्य संग्रह (भाग प्रथम)– आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 4 : अचलदास खींची री वचनिका – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक
इकाई 5 : चौबोली – आलोचनात्मक प्रष्न	15 अंक

पाठ्य पुस्तकें

डॉ. मनोहर शर्मा (सम्पा.) : कुंवरसी सांखलो, पंचषील प्रकाषन, जयपुर
नरोतमदास स्वामी (सम्पा.) :राजस्थानी साहित्य संग्रह (भाग प्रथम), राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
भूपतिराम साकरिया (सम्पा.) : अचलदास खींची री वचनिका, पंचषील प्रकाषक, जयपुर
डॉ. कन्हैयालाल सहल (सम्पा.) : चौबोली, प्रकाषकः द स्टुडेन्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर (राज.)

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ. पूनम दइया : राजस्थानी बात साहित्य , राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
डॉ. षिव स्वरूप शर्मा 'अचल' : राजसथानी गद्य साहित्य : अद्भव और विकास
डॉ. मनोहर शर्मा : राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन
मुकुन्दनारायण पुरोहित : वचनिका अचलदास खींची री (अन्वेषण एवं मूल्यांकन), राजस्थान एज्यूकेषनल स्टोर, बीकानेर

तृतीय प्रष्न–पत्र

साहित्यषास्त्र एंव पाठालोचन

अंक विभाजन 20X5=100 अंक पूर्णांक : 100

इस प्रष्न–पत्र में साहित्यषास्त्र के 80 अंक तथा पाठालोचन के लिए 20 अंक निर्धारित है।

इकाई विभाजन

इकाई 1 : साहित्यषास्त्र	20 अंक
इकाई 2 : भारतीय काव्यषास्त्र– आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक
इकाई 3 : पाष्चात्य काव्यषास्त्र– आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक
इकाई 4 : राजस्थानी काव्यषास्त्र – आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक
इकाई 5 : पाठालोचन : सिद्धान्त और प्रक्रिया – आलोचनात्मक प्रष्न	20 अंक 20अंक

पाठ्यक्रम विषय सामग्री

इकाई 1 : साहित्य का स्वरूप तथा विवेचन, भारतीय एवं पाष्चात्य दृष्टि से, साहित्य के तत्व, काव्य की मूल प्रेरणा और प्रयोजन
इकाई 2 : रस सिद्धान्त : रस–निष्पत्ति, साधारणीकरण, अलंकार – सम्प्रदाय वक्रोक्तिसिद्धान्त (स्वरूप और भेद), ध्वनि–सिद्धान्त (ध्वनी का अर्थ और भेद)
इकाई 3 : अरस्तु के काव्य सिद्धान्त (अनुकृति–सिद्धान्त, विरेचन सिद्धान्त एवं काव्य रूपों का विवेचन), क्रोचे का अभिव्यंजनावाद, आई.ए.रिचर्डस के काव्य सिद्धान्त (मूल्य का सिद्धान्त), कॉलरिज,परम्परावाद और स्वच्छन्दतावाद
इकाई 4 : राजस्थानी दन्दषास्त्र का परिचय, अलंकार,काव्य–दोष
इकाई 5 : पाठालोचन की परिभाषा, स्वरूप और सिद्धान्त

संदर्भ ग्रन्थ

रामचन्द्र शुक्ल : रस मीमांसा
बलदेव उपाध्याय : भारतीय साहित्यषास्त्र
डॉ.रामपत यादव : पाठालोचन और बिहारी सतसई, चिन्ता प्रकाषन, पिलानी
डॉ.मिथलेष कांति तथा डॉ. विमलेष कांति : पाठालोचन – सिद्धान्त और प्रक्रिया
डॉ. रामप्रकाष : समीक्षा– सिद्धान्त , आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
डॉ. ओमानन्द सारस्वत : दोहा – शब्द और व्याप्ति, चिन्ता प्रकाषन, पिलानी
डॉ. गुलाबराय : काव्य के रूप
डॉ.गुलाबराय : काव्य सिद्धान्त और अध्ययन
डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी : साहित्य के प्रमुख सिद्धान्त
डॉ. नरेन्द्र : रस सिद्धान्त
डॉ. भोलाषंकर व्यास : ध्वनी सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त,चौखम्भा प्रकाषन, वाराणसी
डॉ. एम.एम.कत्रे : भारतीय – पाठालेचन की भूमिका(अनु.) डॉ. उदयकरण तिवारी
डॉ. तारकनाथ बाली : पाष्चात्य काव्यषास्त्र का इतिहास, मैकमिलन कम्पनी ऑल इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली
डॉ. केसरी नारायण शुक्ल : पाष्चातय समीक्षा सिद्धान्त , नन्दकिषोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
किसना आढा : रघुवर जस प्रकाष, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
डॉ.सत्येन्द्र : पाठालोचन के सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

चतुर्थ प्रष्न–पत्र

निम्नलिखित प्रष्न पत्रों में से एक लिया जा सकता हैं

निबन्ध अथवा लघु शोध प्रबन्ध अथवा विषिष्ट रचनाकार
अथवा जैन साहित्य

अंक विभाजन 100X1=100

पूर्णांक 100

निबन्ध : इस प्रष्न– पत्र में दिये गये 8(आठ) साहित्यिक विषयों में से केवल एक विषय (टॉपिक) पर राजस्थानी भाषा में निबन्ध लिखना होगा।

लधुषोध प्रबन्ध : राजस्थानी भाषा में लगभग 100 टंकित पृष्ठों में प्रस्तुत करना होगा।

लघु शोध प्रबन्ध केवल वे ही नियमित विद्यार्थी ले सकेंगे, जिन्हें एम.ए. पूर्वार्द्ध (राजस्थानी) की परीक्षा में 55 प्रतिषत या इससे अधिक अंक प्राप्त हुए हों।
लघु शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन विभागीय निर्देषक के योग्यता प्रमाण–पत्र के आाधार पर ब्राह्य परीक्षक द्वारा होगा।

अथवा

विषिष्ट रचनाकार – निम्नलिखित में से किसी एक रचनाकर का विषेष अध्ययन। इस विकल्प को भी एम.ए. पूर्वार्द्ध में 55 प्रतिषत अंक प्राप्त करने वाले नियमित विद्यार्थी ई लें सकेंगे।

बांकीदास,उमरदान लालस, जांभोजी, नरहरिदास बारहट, शंकरदान सामोर, सूर्य मल्ल मीसण, मीरांबाई

संदर्भ ग्रन्थ

विष्णुदत्त शर्मा : सूर्यमल्ल मिश्रण, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
ब्रजमोहन जावलिया : मुहत नैणसी साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
रावत सारस्वत : दुरसा आढा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
रावत सारस्वत : पृथ्वीराज राठौड़, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

अथवा

राजस्थानी जैन साहित्य

अंक विभाजन 20X5=100

पूर्णांक 100

इकाई 1: राजस्थानी जैन साहित्य की पृष्ठभूमि – साहितय– सृजन में जैन यतियों और आचार्यों का योगदान (ष्ताम्बर एवं दिगम्बर संप्रदायों के संदर्भ में) 20 अंक
प्राकृत – अपभ्रंष का जैन साहित्य – प्रमुख रचनाएं और रचनाकार, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, राजस्थानी जैन साहित्य की विषेषताएं

इकाई 2: राजस्थानी जैन साहित्य की विविध विधाएं 20 अंक
(क) गद्य – टीका, बालावबोध, औक्तिक (व्याकरण ग्रंथ)
पट्टावली,गुर्बावली,सीख,चरित्र,कथा (सामान्य परिचय)
(ख) रास,विलास,प्रबन्ध,बेली,फागु चरित्र, संधि, छंद, विवाहली, हियाली, कलष, ढाल, रेलुआ, गीत आदि का सामान्य परिचय, प्रमुख पद्यात्मक रचनाओं का साहित्यिक परिचय

इकाई 3 : राजस्थानी जैन भक्ति साहित्य – जैन – भक्ति का स्वरूप, जैन भक्ति सम्बन्धी रचनाएं, जैन संप्रदाय की पारिभाषिक शब्दावली – उपासरा, श्रावक, मुनि ,यति, वाचक , सेवक, उपज्झाय, महामहोपाध्याय, आचार्य, प्रतिभा , तीर्थंकर,. ऋषि, समाई , पर्युषण, चौमासा आदि 20 अंक

इकाई 4 : राजस्थानी जैन प्रेमाख्यानक साहित्य – 20 अंक
जैन प्रेमाख्यानक रचनाओं का उद्धेष्य , जैन प्रेमाख्यानक रचनाओं की विषय – सामग्री : जैन प्रेमाख्यानकों में प्रयुक्त कथानक – रूढियां एवं उनकी वैज्ञानिकता

इकाई 5 : राजस्थानी जैन साहित्य में इतिहास, समाज संस्कृति एवं दर्षन (पुछ्गल, ईष्वर, प्राण का स्वरूप), राजस्थानी जैन कवियों की प्रमुख काव्य शास्त्रीय रचनाएं, आधुनिक राजस्थानी जैन साहित्य (सामान्य परिचय) 20 अंक

संदर्भ ग्रन्थ

केदारनाथ शर्मा (अनु.) : कथा सरित्सागर, भाग 1–2, चौखंबा प्रकाषन, वाराणसी
घासीराम, धनराज कौठारी : आगम के अनमोल रतन,गांधी मार्ग अहमदाबाद

अगरचन्द नाहटा (सं.) : मणिधारी जिनचन्द्र सुरि अष्टम शताब्दी स्मृति ग्रन्थ
जगदीषचन्द्र जैन : आगम साहित्य में भारतीय समाज
डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री : संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान
डॉ. रामसारगर : जैन भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, ज्ञानपीठ, दिल्ली
डॉ. रामसागर जैन : हिन्दी जैन काव्य और कवि,ज्ञानपीठ
श्रीचन्द जैन : हिन्दी जैन काव्य और कवि, ज्ञानपीठ
श्रीचन्द जैन : 13–14 वीं शताब्दी के जैन संस्कृत महाकाव्य
श्रीचन्द जैन : जैन कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन
डॉ.हरिवंष कोछड़ : अपभ्रंष साहित्य
जगदीशचन्द्र जैन : प्राकृत जैन कथा साहित्य, एल.डी. इंस्टीट्यूट,अहमदाबाद
बनारसीदास : प्राकृत साहित्य का इतिहास
देवेन्द्र कुमार जैन : अपभ्रंष भाषा और साहित्य
प्रो.ईष्वरलाल दवे : गुजराती साहित्य नो इतिहास
मोहनलाल दलीचन्द देसाई : गुर्जर कविओ, भाग 1–4
मोहनलाल दल्लीचन्द देसाई : आनन्द काव्य महोदधि, भाग 7
प्रो.भ.र.मजूमदार : गंजराती साहित्य ना स्वरूपो , आचार्य बुक डिपो, बडोदरा
डॉ.एच.सी. भयाणी एंव अगरचन्द नाहटा (सं.) : प्राचीन गुर्जर काव्य संचय, एल.डी. इंस्टीट्यूट, अहमदाबाद
भंवरलाल नाहटा (सं.) :ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह
डॉ.रामगोपाल गोयल : राजस्थानी के प्रेमाख्यान : परम्परा और प्रगति,राजस्थान प्रकाषन,जयपुर
अगरचन्द नाहटा (सं) प्राचीन काव्यों की रूप परम्परा, भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान, बीकानेर
डॉ.षिवस्वरूप अचल : राजस्थानी गद्य का विकास
भंवरलाल नाहटा (सं) : पद्मिनी चरित्र चौपाई सार्दूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट,बीकानेर
डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव : भारतीय प्रेमाख्यान
डॉ.श्याम मनोहर पांडेय : मध्ययुगीन प्रेमाख्यान
परम्परा (राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल), राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
जैन विद्या पत्रिका : जैन विद्या संस्थान , दिगम्बर जैन अतिषय क्षेत्र, श्री महावीरजी
अनेकान्त पत्रिका : लाल मन्दिर, दिल्ली
जैन भास्कर पत्रिका : आरा (बिहार)

पंचम प्रष्न पत्र

राजस्थानी संत साहित्य

अंक विभाजन 20X5=100

पूर्णांक 100

इकाई 1 : संत शब्द की व्याख्या :
संत काव्य परम्परा एवं मूल प्रेरणा तथा स्त्रोत, संत साहित्य की विषेषताएं 20 अंक

इकाई 2 : राजस्थानी संत साहित्य
धार्मिक– दार्षनिक पृष्ठभूमि : राजस्थानी संत साहित्य को रामानन्द, कबीर,रैदास,पीपा,धन्ना आदि संतों का योगदान 20 अंक

इकाई 3: राजस्थान के प्रमुख संत– संप्रदाय : पष्चिमी राजस्थान के प्रमुख संत–संप्रदाय और उनकी परम्पराएं– विष्नोई संप्रदाय जसनाथी संप्रदाय, रामस्नेही संप्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, आई पंथ, संक्षिप्त इतिहास, प्रमुख संतों की वाणियां और दार्षनिक सिद्धान्त

20 अंक

इकाई 4 : पूर्वी राजस्थान के प्रमुख संत सम्प्रदाय – दादू पंथ, लालदासी पंथ, चरण्दासी संप्रदाय : संक्षिप्त इतिहास, प्रमुख संतों की वाणियां और दार्षनिक सिद्धान्त

20 अंक

इकाई 5 : राजस्थानी संत साहितय की देन
समन्वय की उत्कृष्ट साधना – समाज संस्कृति, धर्म–साधना, दर्षन में सामंजस्य भावना, पर्यावरण संरक्षण, लोक जीवन की अभिव्यक्ति, साहित्यिक तत्त्व, राजस्थानी भाषा को संतों का योगदान 20 अंक

संदर्भ ग्रन्थ

परषुराम चतुर्वेदी : उत्तर भारत की संत परम्परा, भारती भंडार, प्रयाग
पुरषुराम चतुर्वेदी : संत काव्य, किताबमहल, इलाहाबाद
परषुराम चतुर्वेदी : संत साहित्य के प्रेरणा के स्त्रोत, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
डॉ.पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल : हिन्दी काव्य में निर्गुण पंथ संप्रदाय, अवध पब्लिषिंग हाउस, लखनउ
डॉ.विष्णुदत्त राकेष : उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास, साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद
डॉ.वेदप्रकाष जुनेजा : नाथ सम्प्रदाय और साहित्य, गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर
छया बाई री वाणी : बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग
स्वामी केवलराम : रामस्नेही संपगदाय, बीकानेर
स्वामी मंगलदास : दादू संपगदाय का इतिहास, जयपुर
सुरजनदास : श्री जांभेजी महाराज का जीवन चरित्र, कोलायत
डॉ.राधिका प्रसाद त्रिपाठी : रामस्नेही संप्रदाय, फैजाबाद
डॉ. राजदेवसिंह : संत साहित्य का पुनर्मूल्यांकन
डॉ.रामखेलवान पाण्डेय : मध्यकालीन संत साहित्य
डॉ.मदन कुमार जानी : राजस्थान एंव गुजरात के मध्यकालीन संत एवं भक्त कवि
डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी : नाथ संप्रदाय
डॉ.मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य,प्रयाग
डॉ.ब्रजलाल वर्मा : संत कवि रज्जब, जोधपुर
डॉ.पेमाराम : मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन, अर्चना प्रकाषन, अजमेर
डॉ. रामप्रसाद दाधीच : महाराज मानसिंह : व्यक्तित्व और कृतित्व, जोधपुर
डॉ. हरिष्चन्द्र वर्मा : हिन्दी साहित्य का इतिहास, रोहतक

इस प्रकार एम.ए. (उत्तरार्द्ध) राजस्थानी की परीक्षा के पूर्णांक 500 होंगे।

एम.फिल राजस्थानी, 2013–14

विशेष सूचना : (1) एम.फिल.राजस्थानी परीक्षा का माध्यम राजस्थानी भाषा ही होगा।
(2) इस परीक्षा का प्रत्येक प्रष्न–पत्र 3 घण्टे की अवधि तथा 100 अंकों का होगा।

प्रथम प्रष्न –पत्र

शोध का स्वरूप तथा शोध–प्रविधि — पूर्णांक 100

द्वितीय प्रष्न–पत्र

पाठालोचन एवं ग्रन्थ सम्पादन — पूर्णांक 100

तृतीय प्रष्न–पत्र

इस प्रष्न–पत्र में तीन विकल्प होंगे, जिनमें से एक लेना होगा : — पूर्णांक 100

(i) राजस्थानी भाषा
(ii) राजस्थानी काव्य शास्त्र
(iii)भारतीय चिंतन

संपेक्षक–पाठ्यक्रम

राजस्थानी साहित्य का इतिहास — पूर्णांक 100

सेमीनार (इसमें उत्तीर्ण होना अनिवार्य है)

क्रेडिट कोर्स

लघु शोध प्रबन्ध — पूर्णांक 100

मौखिकी — पूर्णांक 100

अनिवार्य

प्रथम प्रष्न–पत्र

शोध का स्वरूप तथा शोध–प्रविधि

अंक विभाजन 20X5=100

पूर्णांक 100

इकाई 1 : शोध का स्वरूप — 20 अंक

(क) शोध, व्युत्पत्ति,परिभाषा एवं स्वरूप
(ख) शोध के तत्त्व, क्षेत्र,दृष्टि,पद्धति,उपस्थपन
(ग) शोध का प्रयोजन
(घ) शोध और समीक्षा

इकाई 2 : शोध के प्रकार 20 अंक

(क) अ . साहित्यिक शोध
आ. अन्तर्विद्यानुवर्ती तुलनात्मक शोध – मनोवैज्ञानिक, समाजषास्त्रीय, सौन्दर्य शास्त्रीय आदि
(ख) भाषा वैज्ञानिक शोध
(ग) पाठालोचन (राजस्थानी ग्रन्थों का शोध के सन्दर्भ में)
(घ) लोक साहित्य शोध

इकाई 3 : विषय चयन एवं शोध प्रविधि – 20 अंक

(क) विषय चयन
(ख) शोध क्षेत्र तथा शोध दृष्टि के आधार पर शोध विषयों के प्रकार
(ग) रूपरेखा निर्माण की वैज्ञानिक पद्धति
(घ) सामग्री संकलन : विभिन्न पद्धतियां–प्रष्नावली, सक्षात्कार, अभिलेख आदि
(ड़) संकलित सामग्री की उपयोग विधि

इकाई 4 : विषय प्रतिपादन की पद्धति – 20 अंक

(क) सामग्री का विभाजन (अध्याय और अनुच्छेद व्यवस्था)तथा संयोजन
(ख) विषय –विवेचन –विष्लेषण,तथ्य निरूपण और तत्वान्वेषण तुलना–तर्क पद्धति
(ग) प्रामाणिकता – अन्त साक्ष्य तथा वर्हि साक्ष्य
(घ) उद्धरण तथा संदर्भोल्लेख (पादटिप्पणी की पद्धति)

इकाई 5 : शोध कार्य की परिपूर्णता – 20 अंक

(क) उपसंहार लेखन (सार एवं उपलब्धियां)
(ख) सन्दर्भ सामग्री की सूची – मूल सामग्री, सन्दर्भ सामग्री पुस्तकें, अभिलेख,ग्रन्थागार , व्यक्तित्व आदि
(ग) परिषिष्ट निर्माण (अतिरिक्त आवष्यक सूचनात्मक सामग्री)

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ. सत्येन्द्र : अनुसंधान,नन्दकिषोर एण्ड ब्रदर्स , बॉस फाटक, वाराणसी
डॉ. विनय मोहन शर्मा : शोध प्रविधि, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
डॉ. नगेन्द्र : अनुसंधान और आलोचना, नेषलन पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
डॉ.देवराज उपाध्याय तथा डॉ. 'दिनेष' : साहित्यिक अनुसंधान के प्रतिमान, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
डॉ. उदयभानुसिंह : अनुसंधान का विवेचन, दिल्ली
डॉ. उर्वषी सूरती : अनुसंधान की व्यावरिक पद्धति, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकार, हीराबाग, बम्बई

डॉ. शषिभूषण सिंहल : साहित्यिक शोध के आयाम,आर्य बुक डिपो,करोलबाग, नई दिल्ली
डॉ. स.भ.ह.राजूरकर : साहित्यिक शोध, राजकमल, नेषनल पब्लिसिंग हाउस , नई दिल्ली
डॉ. वैजनाथ सिंहल : शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्य विधि, द मैकमिलन कम्पनी, नई दिल्ली
डॉ. शैल त्रिपाठी : शोध प्रविधि
अनुसंधान के मुल तत्व, प्रकाषक : कमा. मंषी, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा (सं.) विष्वनाथ प्रसाद मिश्र
'संभावना पत्रिका का शोध विषेषांक', हिन्दी विभाग,कुरूक्षेत्र विष्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

द्वितीय प्रष्न–पत्र

पाठालेचन एवं ग्रन्थ सम्पादन

अंक विभाजन पूर्णांक 100

पाठालोचन 15 X 5= 75 अंक

ग्रन्थ सम्पादन 1 X 25 = 25 अंक

इस प्रष्न–पत्र में पांच इकाई होगी।

इकाई 1: पाठालोचन का सामान्य परिचय, महत्त्व एवं आवष्यकता नामकरण : पाठ विज्ञान, पाठानुसंधान, पाठालोचन परिभाषा : (विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में) कतिपय परिभाषिक शब्द : मूल पाठ,प्रति, मूल प्रति, आदर्ष प्रति प्रतिलिपि, प्रतिलिपि प्रति, पाण्डुलिपि, लिपिकार, पत्र हस्तान्तरण, वंषवृक्ष, पुष्पिका, प्रक्षिप्त अंष आदि

15 अंक

इकाई 2 : पाठ विकृति :

(क) विभ्रान्तियाँ और उनके परिहार के प्रयत्न 15 अंक

(1) बाह्यय विकृतियाँ : लोप

(2) आन्तरिक विकृतियाँ : वृद्धि

(ख) पाठह्यास

(ग) पाठ्यवृद्धि

(घ) प्रक्षेप अंष

इकाई 3 : पाठालेचन की प्रक्रिया

(क) प्रति संग्रह : वंषवृक्ष निर्माण

(ख) पाठ निर्धारण

(ग) पाठ सुधार : विषयानुसंगति
लेखानुसंगति

(घ) पाठान्तर पद्धति

(ड) उच्चतर आलोचना
लिपि विज्ञान : लेखन सामग्री

इकाई 4 : पाठालोचन के सिद्धान्त 15 अंक
प्रमुख राजस्थानी ग्रन्थों का पाठ सम्पादन तथा सम्पादक

इकाई 5 : (1) नरोत्तमदास स्वामी 15 अंक
(2) डॉ. माताप्रसाद गुप्त

संदर्भ ग्रन्थ

डॉ. सत्येन्द्र : अनुसंधान
डॉ. सावित्री सिन्हा तथा विजयेन्द्र स्नातक : अनुसंधान की प्रक्रिया
कन्हैयासिंह : पाठ सम्पादन के सिद्धान्त
डॉ. मिथिलेष कांति तथा डॉ. विमलेष कांति : पाठालोचन सिद्धान्त और प्रक्रिया
डॉ. रामगोपाल शर्मा , दिनेष : पाण्डुलिपि सम्पादन कला
डॉ. सत्येन्द्र : पाण्डुलिपि विज्ञान
डॉ. गोरीषंकर हीराचन्द ओझा : प्राचीन लिपिमाला
डॉ. एस.एम.कत्रे : भारतीय पाठालोचन की भूमिका
मूलराज जैन : सम्पादन शास्त्र
डॉ.देवराज उपाध्याय : साहित्यक शोध के सिद्धान्त और समस्याएँ
एफ.डब्लू हाल : केम्पेलिययन टू क्लासिकल टेक्स्ट
हरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य : द लेंग्वेंज आफ स्क्रिप्स ऑफ एनसिअंट इण्डिया
डॉ. कन्हैयालाल सहल : अनुसंधान और आलोचना
डॉ. सरनामसिंह शर्मा : शोध प्रक्रिया विवरणिका
डॉ.तारकनाथ अग्रवाल : बीसलदेव रास : पाठ, अध्ययन एक विवेचन

द्वितीय प्रष्न–पत्र

पाठालोचन एवं ग्रन्थ सम्पादन

25 अंक

विशेष : इस प्रष्न–पत्र के अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी को राजस्थानी भाषा के किसी एक ग्रन्थ का पाठ सम्पादन लगभग 50 पृष्ठों में राजस्थानी भाषा मे प्रस्तुत करना होगा, जिसका मूल्यांकन आन्तरिक तथा बाह्य परीक्षकों द्वारा होगा। विभागाध्यक्ष तथा विभागीय निर्देषक द्वारा निर्धारित विषय पर ही ग्रन्थ सम्पादन किया जायेगा।
ग्रन्थ सम्पादन की चार टंकित प्रतियां तथा चार सारांष प्रस्तुत करना होगा।

तृतीय प्रष्न–पत्र

अंक विभाजन 20X5=100 पूर्णांक 100

इकाई विभाजन

इकाई 1 : भाषा की परिभाषा, विषेषताएँः भाषा की उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त : भाषा विकास (परिवर्तन) के कारण, भाषा के विविध रूप – ग्राम्य बोली , उप बोली, विभाषा, भाषा (सम्पर्क भाषा,राज्य भाषा, राष्ट्र भाषा का सामान्य परिचय)
संसार के भाषा परिवार – भारत यूरोपीय परिवार
लिपि : भाषा और लिपि का सम्बन्ध : लिपि का प्रारंभिक स्वरूप, भारत की प्रमुख लिपियाँ, वैज्ञानिक लिपि की विषेषताएँ, देवनागरी लिपि का विकास (वर्ण एवं अंकों के संदर्भ में) और उसकी वैज्ञानिकता 20 अंक

इकाई 2ः भाषा विज्ञान : अर्थ एवं परिभाषा, भाषा विज्ञान : कला अथवा विज्ञान, भाषा विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र और उपयोगिताः भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास 20 अंक

इकाई 3 : राजस्थानी भाषा : 20 अंक
राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति एवं विकास : राजस्थानी भाषा के विकास में वैदिक,संस्कृत,प्राकृत, अपभ्रंष और गुजराती का योगदान : राजस्थानी भाषा का क्षेत्र विस्तार : राजस्थानी की प्रमुख बोलियां और उप–बोलियां : मुड़िया लिपि : सामान्य परिचय

इकाई 4 : डिंगल और पिंगल की उत्पत्ति सम्बन्धी प्रमुख मतः डिंगल और पिंगल : भाषा अथवा शौलियां : डिंगल और पिंगल की विषेषताएँ पूर्वी एवं पष्चिमी राजस्थानी का अन्तर : राजस्थानी की सामान्य एवं व्याकरणिक विषेषताएँ 20 अंक

इकाई 5 : राजस्थान की प्रमुख घ्वनियां : राजस्थानी में लिंग, वचन कारक, काल, विभक्तियां, वृति, वाच्य आदि : राजस्थानी एक स्वतंत्र भाषा 20 अंक

अभिस्तवित अन्य

राजस्थान का जैन साहित्य : राजस्थान प्राकृत भारती अकादमी, मोतीसिंह भोमिया का रास्ता, जयपुर
प्रो.रामाश्रय मिश्र एवं डॉ.नरेष मिश्र : भाषा और भाषा विज्ञान
भोलानाथ तिवारी : भाषा विज्ञान
डॉ.सनीति कुमार चाटुर्ज्या : राजस्थानी भाषा : साहित्य संस्थान , उदयपुर
एल.पी.टेस्सोटोरी (अनु.) : डॉ. नामवरसिंह : पुरानी राजस्थानी
जार्ज.ए.ग्रियर्सन (अनु.) : आत्माराम जाजोदिया : राजस्थान का भाषा सर्वेक्षण, राजस्थान भाषा प्रचार सभा,जयपुर
जगदीष प्रसाद कौषिक : भारतीय आर्य भाषाओं का इतिहास
डॉ.मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी भाषा और साहित्य
नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी भाषा : एक परिचय
डॉ.मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा
डॉ.मोतीलाल मेनारिया : राजस्थानी पिंगल साहित्य
सीताराम लालस : राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड), 'राजस्थानी शोध संस्थान,जोधपुर
डॉ.उदयनारायण तिवारी : वीर काव्य
डॉ. गोवर्द्धन शर्मा : डिंगल साहित्य
डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य का आदिकाल
रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास
डॉ.कन्हैयालाल शर्मा : हाडौती बोली और साहित्य
श्याम परमार : मालवी और उसका इतिहास
डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा : मेवाती का उद्‌भव और विकास
डॉ.ओमप्रकाष भारद्वाज : मानव भाषा विज्ञान
डॉ. कैलाषचन्द्र अग्रवाल : शेखावटी बोली का विवरणात्मक अध्ययन
डॉ. रत्नचन्द शर्मा : मानक हिन्छी और भाषा विज्ञान
डॉ. एल.डी. जोषी : बागड़ी बोली का स्वरूप और तुलनात्मक अध्ययन
गौरीषंकर हीराचन्द ओझा : प्राचीन भारतीय लिपिमाला
नरोत्तमदास स्वामी : राजस्थानी व्याकरण
रामकरण आसोपा : मारवाडी व्याकरण
सीताराम लालस : राजस्थानी व्याकरण
सांस्कृतिक राजस्थान : अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन,कलकत्ता
डॉ.देवेन्द्रनाथ शर्मा : भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाषन,दिल्ली
परम्परा : त्रैमासिक पत्रिका के आदिकाल तथा मध्यकाल सम्बन्धी विषेषांक

अथवा

तृतीय प्रष्न–पत्र

राजस्थानी काव्य शास्त्र

अंक विभाजन 20X5=100 पूर्णांक 100

इकाई विभाजन

इकाई 1 : काव्यषास्त्र – अर्थ, काव्यषास्त्र के विविध नाम और उनका औचित्य, काव्यषास्त्र के प्रमुख संप्रदाय, आलेचना शास्त्र में काव्य शास्त्र का स्थान 20 अंक

इकाई 2 : राजस्थानी काव्यषास्त्र से अभिप्राय : राजस्थानी काव्यषास्त्र की पृष्ठभूमि, प्राकृत– अपभ्रंष के प्रमुख लक्षण, ग्रन्थ एवं मान्यताएं 20 अंक

इकाई 3 : राजस्थानी काव्य शास्त्र का अतिहास, राजस्थानी के प्रमुख लक्षण ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन – नागराज पिंगल, पिंगल षिरोमणी, हरि पिंगल प्रबन्ध, रूपदीन पिंगल, अलंकार आषय, रघुनाथ रूपक गीतां रो, रघुवर जस प्रकाष, साहित्यकार, कवि कुलबोध, डिंगल कोष, जसवंत पिंगल आदि 20 अंक

इकाई 4 : राजस्थानी काव्यषास्त्र की विषय वस्तु – छंद, अलंकार, काव्यदोष, गीत, नाम मालाएं, रसे, राजस्थानी दूहा, छप्पय, प्रस्तार विधि, छंद संबंधी नियम, षोडल लक्षण आदि का विषद् विवेचन 20 अंक

इकाई 5 : लक्षण – उदाहरण सहित – 20 अंक

(क) छन्द : दूहा, सोरठा, पद्धरी. सरसी, चौपाई, वस्तु (सवूत), मोरकला गाथा, अनुस्टुप, छप्पय, बिअख्खरी हंस गति, नारी हंसमाला, बीजूमाला, अमृतगति, चंपकमाला , पंचचामर , मोतीयदांम, तोटक, चंद्रायण, रेणकी : रसावला, भूजंगप्रयात धनाक्षरी , हूणफाल , मालिणी सूवदना
डिंगल गीत – सावझड़ी, दुमेली, झमाल, सांणोर, पाडगति, काछो, वेलियो, सुंपखरौ, चौसर
अलंकार वयण सगाई, व्रतयानुप्रास कपाटबंध, अन्तर्लापिका, बहिर्लपिका, सासोतरा, सूषम (सूक्ष्य) पिहित, रूपक, उपमा, आंतयोक्ति, दृष्टांत, उदाहरण, वक्रोक्ति, लोकोक्ति, श्लेष विभावना प्रतीप
शब्द शक्तियां – छबकाल, अपस, अमंगल , नालछेद , बहरौ

अभिस्तावित ग्रन्थ

बलदेव उपाध्याय : भारतीय साहित्यषास्त्र ,चौखमबा, वाराणसी
डॉ.नगेन्द्र : रीति काव्य की भूमिका, नेषनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली
डॉ.कृष्णदेव झारी : भारतीय काव्यषास्त्र
डॉ.नेमनारायण जोषी : चिंतन अनुचिंतन, संधी प्रकाषन, बापू बाजार, उदयपुर
डॉ. ओमानन्द सारस्वत : दोहा शब्द और व्याप्ति, चिंता प्रकाषन, पिलानी
डॉ. भेलाषंकर व्यास : प्राकृत पैगलम,भाग 2 प्राकृत टैक्स्ट सोसायटी, वाराणसी
डॉ. नारायणसिंह भाटी : डिंगल गीत
श्री खारेड (सम्पा.) : रघुनाथ रूपक गीतां रो, नागरी प्रचारिणी सभा, काषी
बंकीदास ग्रन्थवली, भाग 3, नागरी प्रचारिणी सभा, काषी
किसना आडा : रघुवर जस प्रकास – राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
प्रो.नरोत्तम स्वामी : अलंकार पारिजात
सं. नारायणसिंह भाटी : डिंगल कोष , राजस्थानी शोध संस्थान , चौपासनी, जोधपुर
भो.ला. साण्डेसरा : प्राचीन गुजराती वृत रचना, एम.एस.युनि, बडोदरा
देवेन्द्र कुमार जैन : अपभ्रंष भाषा और साहित्य

अथवा

तृतीय प्रष्न–पत्र

भारतीय चिन्तन

अंक विभाजन 20X5=100 पूर्णांक 100

इकाई 1 : भारतीय चिन्तन की पृष्ठभूमि – वैदिक चिन्तन धारा, उपनिषद्,ब्राह्मण संहिताएँ, स्मृतियाँ 20 अंक

इकाई 2 : रामायण और महाभारत की चिन्तन धारा 20 अंक

इकाई 3 : भारतीय चिन्तन का विकास – शैव, शाक्त, वैष्णव , बौद्ध,जैन चिन्तन धाराएँ 20 अंक

इकाई 4 : आधुनिक भारतीय चिन्तन – युगीन परिस्थितियाँ , प्रमुख चिन्तक सम्प्रदाय, प्रमुख चिन्तक – अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, माहात्मा गाँधी 20 अंक

इकाई 5 : भारतीय चिन्तन धारा में राजस्थान का योगदान – बिष्नोई सम्प्रदाय, मारवाड़ का नाथ सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय और नाथद्वारा, निम्बार्क सम्प्रदाय 20 अंक

अभिस्तावित पुस्तकें

जयदेव शर्मा : ऋग्वेद संहिता
तुलसीराम स्वामी : मनुस्मृति भाषानुवाद
पं.मिहिरदेव : याज्ञवल्क्य स्मृति भाषा टीका
पी.वी.काने : धर्मषास्त्र का इतिहास
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : मध्यकालीन धर्म साधना
बलदेव उपाध्याय : भारतीय दर्षन
रामधारीसिंह दिनकर : संस्कृति चार अध्याय
डॉ. भगवतषरण उपाध्याय : संस्कृति के स्त्रोत
ए.बी. कीथ : संस्कृत साहित्य का इतिहास
बलदेव उपाध्याय : संस्कृत साहित्य का इतिहास
हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका
पं. परषुराम चतुर्वेदी : उत्तर भारत की सन्त परम्परा
डॉ. रामेष्वर प्रसाद सिंह : साहित्य में योग का स्वरूप
रामपूजन तिवारी : सूफी साहित्य और साधना

धर्मवीर भारती : सिद्ध साहित्य
डॉ. विजयेन्द्र स्नातक : राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य
जगदीश चन्द्र जैन : जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज
डॉ.प्रेमसागर जैन : हिन्दी जैन भक्ति काव्य और कवि
डॉ.दीनदयाल गुप्त : अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय
डॉ.विष्वनाथ नरवणे : आधुनिक भारतीय चिन्तन